International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

पुराणों में वर्णित नारी अस्मिता विमर्श : आधुनिक परिप्रेक्ष्य में

डॉ.बबलू पाल
(अतिथि प्रवक्ता)
संस्कृत विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
प्रयागराज
E-mail Id: babloop1984@gmail.com

प्रस्तावना :

किसी देश की सामाजिक व्यवस्था मानव-जीवन का एक अपरिहार्य अङ्ग होता है। सामाजिक सुव्यवस्था ही उस देश की समग्र उन्नति के कारण होते हैं क्योंकि एक सुसभ्य समाज ही मनुष्य के सार्वभौमिक विकास के मार्ग को प्रशस्त कर सकता है। सामाजिक सुव्यवस्था बनाये रखने में मनुष्य अपने इतिहास की ओर दृष्टिपात करता है तथा एक सुसभ्य समाज के निर्माण हेतु उसके सुव्यवस्था को अपने समाज में लागू करने के लिए प्रयत्नशील रहता है। पुराण एक ऐतिहासिक ग्रंथ हैं जिनमें इतिहास की घटनाओं का विस्तृत रूप में वर्णन मिलता है। इन पौराणिक ग्रंथों में मानव-जीवन के इतिहास को संकलित किया गया है। इन ग्रंथों के विवेच्य आध्यात्मिकता से लेकर सामाजिक चेतना यथा वर्णाश्रम धर्म, संस्कार, नारी विमर्श, संस्कृति, वास्तुकला आदि अनेकों विषय हैं, जिनकी महत्ता वर्तमान समाज में भी दृष्टिगत होती है।

वैश्विक समाज के सम्मुख अनेकों ऐसे ज्वलन्त सामाजिक मुद्दे हैं जिनके निराकरण के विना एक स्वस्थ समाज के स्वरूप का निर्माण नहीं किया जा सकता है। यद्यपि इन सामाजिक समस्याओं के निराकरण के लिए वर्तमान में अनेकों संवैधानिक कदम भी उठाये जा रहे हैं, बावजूद इसके अनेकों सामाजिक समस्याएँ अभी भी अनसुलझी हुई हैं जो समय-समय पर पुन: एक ज्वलन्त मुद्दे के रूप में उभर कर समाज को प्रभावित करती रहती हैं। अत: आवश्यकता है उन समस्याओं के मूल तक जाने की, क्योंकि उसके मूल तक पहुँचे बिना उसका सार्वकालिक निदान सम्भव नहीं है। इन ज्वलन्त सामाजिक

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at
https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

मुद्दों में समाज एवं शासन, अर्थव्यवस्था तथा पर्यावरण, मानवीय नैतिक मूल्यों का ह्रास आदि को सम्मिलित किया जा सकता है जो न केवल भारत के लिए अपितु सम्पूर्ण विश्व के सामने एक चुनौती के रूप में उभर चुका है।

इन समस्याओं में नारी अस्मिता एवं उनके सुरक्षा, स्वतन्त्रता और अधिकार आदि भी एक ज्वलन्त मुद्दा बना हुआ है, क्योंकि लगातार उनको भ्रूणहत्या,बलात्कार,उत्पीडन, शारीरिक हिंसा, सम्बन्ध विच्छेद जैसी अनेकों सामाजिक समस्याओं को झेलना पड रहा है। अत: उनके निदान हेतु उनके पीछे छिपे हुए कारणों को पहचानना होगा। उनके इन समस्याओं में मनुष्य का नैतिक ह्रास और भोग प्रवृत्ति जैसी अनेकों अमानवीय चरित्र का भी योगदान है। अत: नारियों के प्रति ऐसी अमानवीय सोच को बदलने की आवश्यकता है तथा शास्त्रों की तरफ उन्मुख होकर उन्हें संस्कारित करने की आवश्यकता है, जहाँ इनको समाज में न केवल आदर व सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था,अपितु इन्हें देवी जैसी उपाधियाँ देकर इनकी पूजा भी की जाती थी।

इस सन्दर्भ में पुराणों को यहाँ प्रस्तुत किया जा सकता है, जहाँ स्त्रियों को विद्या,विभूति और शक्ति के स्वरूप लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा के रूप में पूजन किया जाता था। भारत के वेदों एवं पुराणों में नारी को परमेश्वर शक्ति के रूप में स्थान दिया गया है। पुराणों में अनेक ऐसे स्थल दृष्टिगत हैं जहां पर पुरुषों की अपेक्षा नारियों को अधिक सम्मान प्राप्त है। स्कन्दपुराण में कन्याओं की महत्ता का प्रतिपादन करते हुए कहा गया है-

दशपुत्रसमा कन्या दशपुत्रान्प्रवर्द्धयन्।
यत्फलं लभते मर्त्यस्तल्लभ्यं कन्ययैकया॥[1]

अर्थात् एक पुत्री दस पुत्रों के समान है। कोई व्यक्ति दस पुत्रों के लालन-पालन से जो फल प्राप्त करता है वही फल केवल एक कन्या के पालन पोषण से हो जाता है।

अग्निपुराण में स्त्रियों को बहुत ही आदर और सम्मान के साथ देखा जाता था जहाँ इनको देवताओं के साथ साथ इनकी पूजा को भी अपरिहार्य बतलाया गया है,जो इस पुराण के मङ्गलाचरण से भी स्पष्ट है-

श्रियं सरस्वतीं गौरीं गणेशं स्कन्दमीश्वरम्।
ब्रह्माणं वह्निमिन्द्रादीन् वासुदेवं नमाम्यहम्॥[2]

[1] *स्कन्दपुराण.* कुमारिकाखण्ड.२३.४६
[2] *अग्निपुराण,* मङ्गलाचरण

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

अग्निपुराण के ही इक्कीसवें अध्याय में विष्णु आदि देवताओं के पूजन के पश्चात कुछ देवियों के पूजन को भी अनिवार्य बतलाया गया है जो निम्न रूप से द्रष्टव्य है-

दीप्ता,सूक्ष्मा,जया,भद्रा,विभूति,विमला,अमोघा,विद्युता तथा सर्वतोमुखी इन नौ शक्तियों की पूजा का विधान किया गया है।[3] एक अन्य स्थल पर नारद ने कहा है कि विष्णु आदि देवताओं का पूजन करने के पश्चात् विमला,उत्कर्षिणी,ज्ञाना,क्रिया,योगा आदि जो शक्तियां हैं उनकी पूजा करें तथा प्रह्वी, सत्या,ईशा,अनुग्रहा,सरस्वती आदि का पूजन करें।[4]

विषय की विविधता एवं लोकप्रियता की दृष्टि से इसका विशेष महत्त्व है। अनेक विद्वानों ने विषय-वस्तु के आधार पर इसे "भारतीय संस्कृति का विश्वकोश" कहा है। इसमें देवाराधना,सृष्टि वर्णन,दीक्षा आदि के साथ-साथ वर्णाश्रमधर्म,संस्कार,आश्रम-व्यवस्था,सांस्कृतिक चेतना आदि अनेकों विषयों का अत्यन्त ही सुन्दर रूप से प्रतिपादन किया गया है। इसके विषय वैविध्य के कारण ही इसके माहात्म्य बतलाते हुए कहा गया है- *'आग्नेय हि पुराणोऽस्मिन् सर्वा विद्या प्रदर्शिता:'*[5] इसके छठें अध्याय के अयोध्याकाण्ड में कौसल्या,सुमित्रा और कैकेयी के चरित्र को दर्शाया गया है, जहाँ कैकेयी लोभरूपी सागर में डूबकर अपने पुत्र भरत को राज्य दिलाने के लोभ से श्रीराम के चौदह वर्ष के वनवास और अपने पति की मृत्यु का कारण बनती है, इसके बावजूद भी वह श्रीराम आदि के सत्कार की कृपा पात्र बनीं। भगवान् श्रीराम ने उनको त्यागने की अपेक्षा पूर्व की भाँति माता शब्द से ही सम्बोधित भी किया तथा भरत के अपनी माता कैकेयी के प्रति अपने हृदय में पल रहे क्षोभ को भी दूर किया।[6]

इसी पुराण के सप्तम अध्याय के अरण्यकाण्ड में नारी के प्रति सम्मान भगवान् श्रीराम के चरित्र के माध्यम से दिखाया गया है। वन में पत्नी सीता के दु:सह्य विरह को सहन करते हुए भी सुपर्णखा के प्रेम प्रस्ताव को अस्वीकार कर देते हैं।[7] उनका यह चरित्र नारी के प्रति आदर और सम्मान की पराकाष्ठा ही है,क्योकिं जिस रावण ने उनकी पत्नी का अपहरण किया था,सुपर्णखा उसी की बहन थी। ऐसी स्थिति में यदि कोई साधारण पुरुष

[3] *अग्निपुराण,* २१.१९
[4] *अग्निपुराण,*२१.१-८
[5] *अग्निपुराण,* ६.३२.३
[6] *अग्निपुराण,*६.४३-५१
[7] *अग्निपुराण,* अरण्यकाण्ड,६-१२

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at
https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

रहा होता तो अवश्य ही बदले की भावना से ही सही उसके प्रेम प्रस्ताव को स्वीकार कर लेता। रावण के द्वारा अपहृत सीता का पतिव्रत धर्म भी प्रशंसनीय है। रावण के विभिन्न प्रलोभनों को अस्वीकार करती हुई तथा उसके अनेकों प्रकार के उत्पीडन को सहन करती हुई भी वह रावण के समस्त प्रस्ताव को अस्वीकार कर देती हैं[8] जो अपने पति के प्रति उनकी सच्ची श्रद्धा को भी चिह्नित करता है। इसके अतिरिक्त भी इस शास्त्र के किष्किन्धा,सुन्दरकाण्ड,युद्धकाण्ड व उत्तरकाण्ड आदि में भी नारियों के उत्कृष्ट चरित्र तथा उनके आदर व सम्मान का विशद रूप में विवेचन किया गया है। स्त्रियों के सम्मान व अधिकार का दर्शन इस पुराण के कुछ स्थलों से भी हो जाता है जहाँ मातृप्रधान समाज का स्वरूप दृष्टिगत होता है- **अनुलोम्येन वर्णानां जातिर्मातृसमा स्मृता**।[9] अर्थात् अनुलोम विवाह से उत्पन्न सन्तान की जाति माता की जाति के समान होती है। यहीं पर वैदेहक का कर्म स्त्रियों की रक्षा करना बतलाया गया है- **स्त्रीजीवनं तु तद्रक्षा प्रोक्तं वैदेहकस्य च**।[10] स्त्री तथा बालक की रक्षा के लिए देहत्याग करना वर्ण बाह्यों की सिद्धि का कार्य बतलाया गया है- ***स्त्रबालाद्युपपातौ वा बाह्यानां सिद्धिकारणम्।*** [11] यहाँ पर कन्या को बेचना एक पाप कर्म बतलाया गया है- *अपत्यविक्रयासक्ते निष्कृतिर्न विधीयते।*[12] यहाँ पर विवाहित स्त्रियों को पाँच स्थितियों में पुनर्विवाह करने के भी अधिकार प्राप्त है-

नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीबे च पतिते पतौ।
पञ्चस्वापत्सु नारीणां पतिरन्यो वीयते॥[13]

इसी पुराण में स्त्रियों के लक्षण भी बतलाये गये हैं जो कुल के लिए वरदान सिद्ध होती हैं-

न लोलुपा न दुर्भाषा शुभा देवादि पूजिता।
गण्डैर्मधूकपुष्पाभैर्न शिराला न लोमशा॥[14]
न संहतभ्रूकुटिला पतिप्राणा पतिप्रिया।

[8] *अग्निपुराण,* अरण्यकाण्ड, १३-१९
[9] *अग्निपुराण,* १५१.१०
[10] *अग्निपुराण,*१५१.१४
[11] *अग्निपुराण,*१५१.१८
[12] *अग्निपुराण,*१५४.४
[13] *अग्निपुराण,*१५४.६
[14] *अग्निपुराण,* २४४.५

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

अलक्षणापि लक्षण्या यत्राकारस्ततो गुणा:॥[15]

ब्रह्माण्ड पुराण में कन्यायों का जन्म शुभ माना गया है- *प्रसूत्यामपि दक्षस्य कन्यानामुद्भव: शुभ:।*[16]

दक्ष की पुत्री को परम शुभ दौहित्र कहा गया है-

दक्षस्य चापि दौहित्रा: प्रियाया: दुहितु: शुभा:।
ब्रह्मादिभिस्ते जनिता दक्षेणैव च धीमता॥[17]

हरिवंशपुराण में नारी को एक अच्छी माता के रूप में भी दर्शाया गया है।[18] मार्कण्डेयपुराण में भी माता के स्वरूप का वर्णन मिलता है कि माता मदालसा ने अपने पुत्रों को लोरियों के माध्यम से शिक्षा प्रदान करके उन्हें संसार की समस्त बुराईयों से मुक्त कर दिया था।[19] यहीं पर ही स्त्री-पुरुष के मानसिक एकरूपता का उदाहरण भी द्रष्टव्य है- कुष्टरोग से पीडित पति की पत्नी शाण्डिली द्वारा सूर्य के उदय को रोक देने की कथा पवित्र नारी के अलौकिक तेज को प्रदर्शित करता है।[20]

पुराण का सामान्य परिचय :

ब्रह्माण्ड पुराण में पुराण के पाँच लक्षण दिये जाने से पूर्व पुराणों की ज्ञान परम्परा को बतलाया गया है। लोक तत्त्व के अर्थ वाले, वेद के समान सम्पूर्ण पुराण को भगवान् प्रजापति ने वशिष्ठ मुनि को पढाया, वशिष्ठ मुनि ने अमृत के समान इस तत्त्वज्ञान को शक्ति के पुत्र और अपने पौत्र पराशर को पढाया,पराशर ने जातूकर्ण्य ऋषि को, जातूकर्ण्य ऋषि से द्वैपायन को, परम संयमी द्वैपायन ऋषि ने इस पुराण को लोकतत्त्व के विधान के लिए अपने पाँच शिष्यों- जैमिनि,सुमन्तु,वैशम्पायन,पैलव और लोमहर्षण को पढाया था।[21] यहीं पर नैमिषारण्य में सूत ऋषि ने पुराणों के पञ्चलक्षणों को बतलाया था जो निम्न रूप से द्रष्टव्य हैं-

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।

---

[15] *अग्निपुराण,* २४४.६
[16] *ब्रह्माण्डपुराण,* १.५९
[17] *ब्रह्माण्डपुराण,* १.१०३
[18] *हरिवंशपुराण,*१०८
[19] *मार्कण्डेयपुराण,* मदालसा का पुत्र उल्लापन, ११-६२
[20] *मार्कण्डेयपुराण,* प्रथमखण्ड, अध्याय १६,३१-३२
[21] *ब्रह्माण्डपुराण,* प्रथमखण्ड.८-१४

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at
https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्॥[22]

वर्तमान समाज में नारियों की दशा एवं दिशा :

वर्तमान समाज में नारियों के प्रति जो दृष्टि बन रही है वह उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद है क्योंकि इस युग में नारियों को बहुत ही अमानवीय व्यवहारों को सहन करना पड रहा है। शिक्षित एवं अशिक्षित समाज में उनका शोषण हो रहा है । इसका एक मात्र कारण है व्यक्ति के मानवीय नैतिक मूल्यो का पतन। वर्तमान समाज के बहुत अधिकांश लोग जो अपने को उत्तर आधुनिकतावादी बताकर स्वतन्त्रता के पर्दे के भीतर स्वच्छन्दता का रस लेते हैं जिनमें पुरुष और स्त्री दोनों स्वैच्छिक रूप से शामिल हैं, उनका एक मात्र उद्देश्य होता है मानवजीवन के चरम रस को प्राप्त करना जो उनकी दृष्टि में रस तो है पर वह मनुष्य के चारित्रिक और शरीरिक दोनो प्रकार के पतन का कारण बनता है और बाद में यही उनके असंतोष का कारण बनता है। अत: इन समस्याओं के निवारण हेतु पुराण आदि प्राचीन भारतीय शास्त्रों की ओर उन्मुख होने की आवश्यकता है। जहाँ स्त्री एवं पुरुष दोनों को शास्त्र विहित संस्कारों से परिमार्जित करके उनके चरित्र को शुद्ध बनाया जा सकता है जिससे एक सुसभ्य समाज का निर्माण हो हो सकता है।

उद्देश्य :

ध्यातव्य है कि वैदिककालीन समाज में नारी की स्थिति एवं स्थान अत्यन्त उन्नत था। अपाला, घोषा, वाग्म्भृणी आदि वैदिक ऋषिकाओं का नामोल्लेख वैदिक साहित्य में प्राप्त होता है। वैदिक साहित्य में नारी की स्थिति विषयक अनेक शोधकार्य किये जा चुके हैं परन्तु पुराणों में नारी विषयक शोधकार्य दृष्टिपथ में नही आया। अस्तु, प्रस्तुत शोध कार्य का प्रमुख उद्देश्य आधुनिक समाज में व्याप्त नारी विषयक समस्याओं के मूल का अन्वेषण करके उसे प्राचीन भारतीय शास्त्र पुराणों को आधार बनाकर उसमें निहित मानवीय नैतिक मूल्यों को मानव कल्याण के लिए प्रकाश में लाना। प्राचीन भारतीय समाज में स्त्री-पुरुष में कोई मानसिक भेद नहीं था जिसके कारण वहाँ नारी विषयक कोई भी समस्या नहीं थी और समाज सुख, शान्ति और समृद्धि से युक्त था। अत: पुराणों

[22] *ब्रह्माण्डपुराण*, प्रथमखण्ड.३७

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

में प्रतिपादित नारी अस्मिता को प्रकाश में लाकर वर्तमान समाज में व्याप्त बुराईयों को दूर करने का एक लघु प्रयास भी प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य होगा।